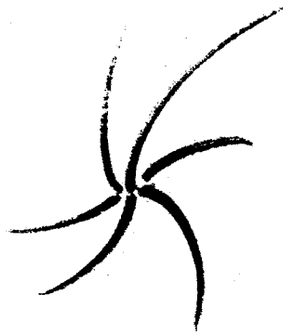

अध्याय - पाँचवा

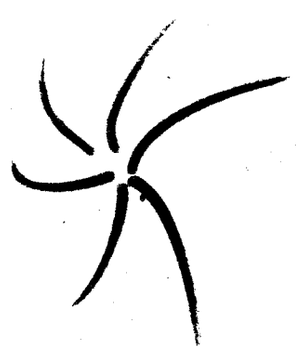

-: अध्याय पाँचवा :-

उपसंहार

रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी निबन्ध साहित्य के प्रमुख आधार स्तंभ है। उन्होंने अपने जीवन को जिस रूपमें देखा, जाना पहचाना है ठीक उसी रूपमें अपने साहित्यमें अभिव्यक्त किया है।

उनके निबन्धोंका अध्ययन करते समय निम्न लिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हो गई है।

[१] पहले अध्यायमें शुक्ल का जन्मसे लेकर मृत्यु तक का परिचय देने का प्रयास किया है। साथ ही साथ उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया है। शुक्लने पंधरावर्ष की आयुसे लिखना शुरु किया था तभीसे अंत तक लगातर साहित्य की सभी विधाओंमें लिखते रहे। उन्होंने निबन्ध, लेख, अनुवाद, काव्य, प्रबन्ध, टिप्पणी जीवन चरित्र आदि विधाओंमें भी विपुल लेखन किया है। पहले अध्याय को पढने के बाद शुक्ल का व्यक्तित्व वस्तुत: बहुमुखी हैं यह सिध्द होता हैं।

[२] दूसरे अध्यायमें शुक्ल के युगीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवेश का स्पष्ट प्रतिफलन का विवेचन किया हैं। इन परिस्थितियों का शुक्ल के साहित्यपर भी प्रभाव पडा था। शुक्लके समयमें भारत स्वतंत्र नही था। देशमें सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के आन्दोलनों के कारण परिवर्तन आया था। धर्मसंस्थापक और शासनकर्ते भय के द्वारा धर्म प्रसार और शासन करते थे। इनस्थितियोंमें परिवर्तन लाने का सूक्ष्म संकेत शुक्ल के निबन्धों में मिलता है आदि का जिक्र किया गया हैं।

-: तीसरा अध्याय :-

तीसरे अध्यायमें शुक्ल के निबन्धों का स्वरूप का विवेचन किया हैंगया हैं। जिसमें निबन्ध की भारतीय और पाश्चात्य परिभाषाओं का उल्लेख किया हगया हैं। शुक्लके निबन्ध के प्रकारों का विवेचन किया गया है। साथ ही साथ निबन्ध के भेदोंका भी इसमें परिचय देने का प्रयास किया हैं। उनके साहित्यिक निबन्ध और साहित्येतर निबन्ध प्रकारों का जिक्र किया गया हैं। साहित्यिक निबन्धमें भी निम्नप्रकारों का विवेचन करने का प्रयास किया हैं। वैचारिक निबन्ध, सैध्दान्तिक निबन्ध और व्यावहारिक निबन्ध आदि का जिक्र किया हैं।

-: चौथा अध्याय :-

चौथे अध्याय का अध्ययन करते समय उनके निबन्धोमें चित्रित निम्न तथ्य मिलते हैं। उनके निबन्धों के प्रकारों का और तत्वोंका विवेचन किया गया है। असंकलित और संकलित निबन्धोमें मनोविश्लेषणात्मक और विचारात्मक प्राय: निबन्ध लिखे है वे निबन्ध शुक्ल के गंभीर व्यक्तित्व प्रखर पांडित्य, गहन चिन्तन, अद्वितीय विचारपध्दति तथा बुध्दि एवं ह्रदय के सफल सामंजस उसमें देखने को मिला है। संकलित निबन्धोमें मानवी मनमें पैदा होनेवाले भावोंका मनोविश्लेषणात्मक और विचारात्मक पध्दतिसे चित्रण किया हैं। उनके निबन्ध जो निम्न है। "भाव और मनोविकार", "उत्साह", "श्रध्दा-भक्ति", "करुणा", "घृणा", "भय", "क्रोध" में देखने को मिला है। शुक्लके मनोविकार के निबन्धोमें गंभीर चिन्तन और मनन की शक्ति का संगम का विवेचन करनेका प्रयास किया हैं।

समिक्षात्मक निबन्ध भी उनके गहरे अध्ययन और पांडित्य का दर्शन दिखानेवाले लगते है इसका भी विवेचन किया गया है।

अत: निष्कर्ष के रूपमें हम कह सकते हैं कि शुक्ल के पूरे निबंधो में गहन चिन्तन और मनन कि शक्ति का विवेचन किया गया हैं। वे एक सिध्दहस्त विचारात्मक और मनोविश्लेषणात्मक निबन्ध लेखक थे। उनकें निबन्धोंमें प्रौढ पांडित्य दिखाई देता हैं। उनके साहित्य का केन्द्र भारतीय संस्कृति और परंपरा है। शुक्ल का स्थान भारत के ही नही विश्व के प्रथम श्रेणी के समीक्षकोंमें बहुत ही उच्च कोटी का हैं। इसलिए विद्वानोंने शुक्लजी को सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार एवं समीक्षक के रूप में मानना पडता हैं। शुक्लजीने साहित्यमें समाज के प्रति अपना उत्तर दायित्व अंत तक निभाया हैं।

:=:=:=:=:=:

परिशिष्ट

सहाय्यक ग्रंथ विवेच्य ग्रंथ

अ.नं.	ग्रंथ का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन संस्था एवं संस्करण
[१]	चिन्तामणि भाग-१	रामचन्द्र शुक्ल	इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग १९५६
[२]	चिन्तामणि भाग-२	रामचन्द्र शुक्ल	नागरि प्रचारिणी सभा

संदर्भ ग्रंथ

अ. नं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन संस्था एवं संस्करण
१]	हिन्दी के प्रतिनिधि निबंधकार	डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा - २ द्वितिय संस्करण - १९८३
२]	हिन्दी निबन्धोंका अध्ययन	डॉ. मु. ब. शहा	पुस्तक संस्थान, कानपूर - १२ जनवरी - १९७३
३]	आचार्य शुक्ल- प्रतिनिधी निबन्ध	सुधाकर पांडे	राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली १९७६
४]	चिन्तामणि	मूल लेखक रामचन्द्र शुक्ल मंजुषा लेखक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	इंडियन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, १९९३
५]	साहित्यिक निबन्ध	डॉ. गणपती चन्द्र गुप्त	
६]	हिन्दी साहित्य का इतिहास	रामचन्द्र शुक्ल	नागरिप्रचारिणी सभा - १९४०
७]	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल निबन्धयात्रा	कृष्णदेव झारी	नई दिल्ली, इतिहास शोध संस्थान, १९८४
८]	हिन्दी साहित्यमें निबन्ध और निबन्धकार	गंगाप्रसाद गुप्त	
९]	हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्भव और विकास	ब. ल. कोतमिरे	
१०]	हिन्दी साहित्य का इतिहास	शिवकुमार शर्मा	